



डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, बिहार- 848 125

कृषि विज्ञान केन्द्र, बेगूसराय



उपलब्धियों

पर एक नजर



कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान, पटना
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली



मुख्य संरक्षक

डॉ. पी.एस. पाण्डेय

कुलपति

डॉ. रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर, बिहार

संरक्षक

डॉ. मंयक राय

निदेशक प्रसार शिक्षा

डॉ. रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर, बिहार

मुख्य संपादक

डॉ. राम पाल

वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान

संपादक

डॉ. विपिन

वि.व.वि. पशु चिकित्सा

डॉ. एन.एन. पाटिल

वि.व.वि. उद्यान

श्री अंशुमान द्विवेदी

का. स. लैब

संकलन

श्री चन्द्रमा सिंह

आशुलिपिक

डॉ. रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर, बिहार



कुलपति का संदेश

कृषि विश्वविद्यालय किसानों के सामने आने वाली समस्याओं और चुनौतियों को हल करने के लिए प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए लगातार काम कर रही है, ताकि लाभ को अधिकतम करने की दिशा में कृषि कार्यों को आसान बनाया जा सके। कृषि विज्ञान केन्द्र कुशल और उद्यमशील मानव संसाधनों के निर्माण के लिए हितधारकों को सर्वोत्तम कौशल और ज्ञान प्रदान करता है। कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों, प्रसार कार्यकर्ताओं और किसानों के प्रक्षेत्र में अग्रिम पंक्ति प्रसार कार्यक्रम एवं क्षमता विकास के लिए काम कर रहे हैं और क्षेत्र की स्थितियों में प्रौद्योगिकी मूल्यांकन भी कर रहे हैं।

भारतीय कृषि अद्वितीय एवं विविध है जो विशाल आबादी को आजीविका और आय प्रदान करती है। विश्वविद्यालय अपने कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से ग्रामीण भारत के समग्र विकास के लिए कृषि प्रसार, अनुसंधान और प्रबंधन प्रणाली को मजबूत कर रहा है। इस प्रयास में केन्द्र ने पिछले वर्ष के दौरान अपनी उपलब्धियों को इस विवरणिका में संकलित किया है। मुझे उम्मीद है कि यह काफी आगे तक जाएगा और यह विस्तार अनुसंधान और ज्ञान प्रबंधन में और सुधार के लिए भविष्य की योजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मैं इस विवरणिका को सार्वजनिक उपयोग के लिए लाने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों के कर्मचारियों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान का संदेश



किसानों की समस्याओं के निराकरण हेतु कृषि विज्ञान केंद्र, बेगूसराय एकल खिड़की पद्धति पर काम कर रहा है घ किसानों के लिए खेती, उद्यान, पशुपालन आदि में प्रयुक्त उन्नत तकनीक का परीक्षण, प्रत्यक्षण एवं प्रशिक्षण द्वारा जिले के किसानों की उपज एवं आय में सतत वृद्धि, नए-नए कृषि आधारित रोजगारों के सृजन में मार्गदर्शन, परंपरागत तकनीको में विकास आदि हमारे प्रमुख कार्य हैं घकृषि को लाभकारी बनाने के लिए बिना जुताई गेहूं, सरसों, मसुर, मक्का आलू आदि की खेती, प्राकृतिक खेती, जैव उपादान उत्पादन, पोषण वाटिका, कस्टम हायरिंग सेंटर, श्री अन्य उत्पादन एवं प्रशंसकरण, दाल मिल निराश्रित पशु प्रबंधन इकाई, बकरी पालन इकाई, कुक्कूट पालन इकाई आदि पर केंद्र द्वारा अनवरत प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है हमारा उद्देश्य है कि केंद्र को इतना विविधता युक्त बनाया जाए की जिले के प्रत्येक किसान को केंद्र से कुछ नाकुछ लाभ अवश्य प्राप्त हो



1. परिचय

कृषि विज्ञान केन्द्र, बेगूसराय की स्थापना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के पत्रांक 3-2/92 कृ०वि०के० दिनांक 30.03.1992 के द्वारा बेगूसराय जिले के खोदावन्दपुर प्रखण्ड मुख्यालय पर की गयी। जिला मुख्यालय से 40 किमी. दूर यह राजकीय राज्यमार्ग संख्या 55 के किनारे स्थित है। केन्द्र के समस्त तकनीकी हस्तान्तरण कार्यक्रम "करके सीखना" एवं "देखकर विश्वास करना" के सिद्धांत पर संचालित किया जा रहा है तथा प्रौद्योगिकी में निहित वास्तविक दक्षता को सिखाने पर बल दिया जाता है। यह जिला स्तर पर केन्द्र सरकार की एक ऐसी महत्वाकांक्षी वैज्ञानिक संस्था है जहाँ किसानों एवं कृषि कार्य में संलग्न महिलाओं तथा ग्रामीण युवको/युवतियों को व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे वे स्वावलम्बी बनने के साथ तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर सकें। प्रशिक्षण मुख्यतः फसलोत्पादन, पौध सुरक्षा, पशु पालन, कृषि अभियांत्रिकी, उद्यानिकी जैसे अनेक कृषि सम्बन्धी विषयों में दिया जाता है। केन्द्र के द्वारा किसानों के खेतों पर किसानों को शामिल करते हुए वैज्ञानिकों की देख-रेख में उन्नत तकनीकी का परीक्षण किया जाता है तथा कृषकों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं के समक्ष आधुनिकतम वैज्ञानिक तकनीक का अग्रिम-पंक्ति प्रत्यक्षण भी किया जाता है। कृषि विज्ञान केन्द्र वैज्ञानिकों, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा कृषकों की संयुक्त सहभागिता से कार्य करता है। केन्द्र पर मुर्गी पालन, निराश्रित पशुशाला, केचुआ पालन, अजोला उत्पादन, सोलर सिंचाई प्रणाली, कस्टम हायरिंग सेन्टर, औद्यानिक फसलों की मातृ वृक्ष वाटिका, जमीन के अन्दर पाईप द्वारा/स्प्रिंकलर व ड्रिप सिंचाई पद्धति स्थापित है। इसके अतिरिक्त किसानों के समग्र विकास हेतु मृदा जाँच मिट्टी जाँच प्रयोगशाला, मशरूम उत्पादन, संरक्षित खेती हेतु पाली हॉउस, नेट हॉउस आदि की स्थापना की गई है। केन्द्र के प्रक्षेत्र पर तकनीकी पार्क (फसल संग्रहालय) के रूप में अनवरत कार्य कराया जा रहा है, जिससे किसानों का केन्द्र पर भ्रमण के दौरान "देखकर विश्वास करो" के सिद्धांत द्वारा तकनीकी का हस्तान्तरण हो रहा है।

2. कृषि विज्ञान केन्द्र, अधिदेश

कृषि तकनीकों के अनुप्रयोग एवं क्षमता संवर्धन हेतु उनका प्रत्यक्षण एवं परीक्षण करना।

3. कृषि विज्ञान केन्द्र, की प्रमुख गतिविधियाँ

1. जिले में प्रचलित कृषि प्रणालियों के अन्तर्गत किसानों के खेत पर परीक्षण (ऑन फार्म टेस्टिंग) द्वारा स्थान विशेष हेतु उपयुक्त कृषि तकनीकों की पहचान करना।
2. कृषको प्रक्षेत्रों पर उत्पादन तकनीकों की क्षमता की सत्यापन/प्रदर्शन हेतु अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण आयोजित करना।
3. किसानों हेतु आधुनिक कृषि तकनीकों के विषय में ज्ञानार्जन एवं कौशल संवर्धन हेतु प्रशिक्षण आयोजित करना।
4. प्रसार कार्यकर्ताओं के ज्ञान संवर्धन हेतु प्रशिक्षण आयोजित करना।

निराश्रित पशु मुख्य रूप से खेतों, सड़कों, बाजारों आदि में भ्रमण करते रहते हैं, खेत में पहुँचकर ये किसानों का फसल खा लेते हैं और उन्हें अपूर्ण क्षति पहुँचाते हैं, इसको ध्यान में रखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र बेगूसराय ने वर्ष 2022-23 में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के वित्तीय सहयोग से निराश्रित पशुओं के प्रबंधन हेतु एक माडल विकसित करने की शुरुआत की इस माडल में 100 पशुओं के रखने के लिए योजना थी और उनके रख-रखाव पर खर्च के लिए 1000 कड़कनाथ मुर्गा तथा



ग्यारह बकरी पालन करने का प्रस्ताव था, पोषण युक्त चारा उपलब्ध कराने के लिए सहजन, बरसीम एवं वर्मीकम्पोस्ट को भी जोड़ा गया। पहले वर्ष में 16 पशुयें, 200 कुक्कुट तथा 11 बकरियों के साथ इस इकाई की शुरुआत की गयी। खानपान एवं चिकित्सीय प्रबंधन से पहले वर्ष में एक गाय ने बच्चा दिया तथा दूसरे वर्ष में 2 अन्य गायों ने भी बच्चा दिया। शुरुआत से ही दो गायों को किसानों ने दूध देते हुए ही दान कर दिया था दूसरे वर्ष में इस माडल से कुल 1,19,200.00 का लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही साथ तीन लोगो को नियमित रोजगार प्राप्त हुआ। तीसरे वर्ष में चार गायें गाभिन है तथा दो दूध दे रही है गाय के गोबर एवं मुत्र से जीवामृत, घन जीवामृत, बीजामृत, वर्मीकम्पोस्ट आदि का उत्पादन हो रहा है

अजोला उत्पादन इकाई



केन्द्र पर अजोला उत्पादन इकाई वर्ष 2012 में प्रारंभ किया गया था। पशुपालक, कुक्कुटपालक तथा मछलीपालकों के लिए यह एक उत्तम चारे का विकल्प है। पशुओं को 1.5-2.0 किलो अजोला नियमित आहार के साथ खिलाया जा सकता है। डेयरी गायों पर अजोला फीडिंग का आकलन करने पर पाया गया है कि इसके उपयोग से दूध एवं शारीरिक वजन में वृद्धि होती है। विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थान जैसे कि आई.टी.सी मिशन सुनहरा कल, प्रदान, जीविका आदि की सहायता से अजोला पर प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्षण किया जा रहा है। वर्तमान में कृ.वि.

के. के पास तीन अजोला यूनिट है जिनसे जिले के किसानों को अजोला का बीज उपलब्ध हो रहा है।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु वर्ष-2022-23 में कृषि विज्ञान केन्द्र, बेगूसराय के प्रक्षेत्र में एक एकड़ क्षेत्रफल में प्राकृतिक खेती प्रदर्शन इकाई स्थापित की गई है। जिसमें वर्ष 2022-23 में रबी फसल में गेहूँ (HD-2967) की खेती तथा खरीफ 2023 फसल में श्रीअन्न (रागी, कौनी, चीना, बाजरा एवं सांवा) की खेती की गई थी। रबी 2023-24 में प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत 10 फसलों (मेथी, मंगरैला, सौंफ, अजवाइन, धनिया, चना, मटर, तीसी, काला गेहूँ तथा सोना मोती गेहूँ) का प्रत्यक्षण किया गया। प्राकृतिक खेती के वृहत प्रचार-प्रसार हेतु 27 जनजागरूकता तथा 10 प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्ष 2023-24 में किया गया। जिले के तीन गांव तेतरी, विक्रमपुर एवं फफौत को प्राकृतिक खेती के अन्तर्गत प्रत्यक्षण हेतु गोद लिया गया है तथा कुल 12 किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा जीवामृत, बीजामृत, घनजीवामृत, वेस्टडिकम्पोजर इत्यादि पर तकनीकी सहयोग प्रदान किया जा रहा है।



कृषि विज्ञान केन्द्र, बेगूसराय के परिसर में 150 मी² क्षेत्रफल में आदर्श पोषण वाटिका की स्थापना की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य आहार विविधता, पोषण सुरक्षा, स्थानीय आजीविका सृजन और पर्यावरणीय स्थिरता आदि कई लक्ष्यों को पूरा करना है। पोषण वाटिका में फल वृक्ष जैसे सहजन, केला, नींबू, ड्रैगन फ्रूट, कढ़ीपत्ता, अमरुद, आमड़ा, मौसमी सब्जी कन्द वाली फसल जैसे ओल, हल्दी, अदरक आदि का उचित समावेश किया गया है वर्ष 2023-24 में कुल 66 आंगनवाड़ी सेविकाओं को पोषण वाटिका स्थापना हेतु केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण दिया गया है जिले के लगभग 1600 स्कूलों में से 400 तक अगले दो वर्षों में अपनी पोषण वाटिका पहुँचाने का लक्ष्य है।



कस्टम हायरिंग सेंटर

5

कृषि विज्ञान केन्द्र में कृषि यांत्रिकरण उप-परियोजना तथा जलवायु अनुकूल खेती कार्यक्रम के संयुक्त प्रयास से एक कस्टम हायरिंग सेंटर की स्थापना की गयी है। जिसमें विभिन्न प्रकार के कृषि यंत्र जैसे रिपर कम बाइंडर, लेजर लैंड लेबलर, जिरो टिलेज, एम.बी. प्लॉ, कल्टीवेटर, हैप्पी सीडर, पावर विडर, मल्टी क्रॉप प्लांटर, पोटैटो प्लांटर, पोटैटो डीगर, रेज्ड वेड प्लांटर, धान-गेहूँ सीडर, ट्रैक्टर एवं थ्रेसर सम्मिलित हैं। जिसमें किसान अपनी जरूरतों का मशीन का अग्रिम बुकिंग करा सकते हैं। वित्तीय वर्ष 2023-24 में इस सेंटर से केन्द्र को 4.5 लाख से अधिक का राजस्व प्राप्त हुआ तथा जिले में विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत स्थापित 37 कस्टम हायरिंग सेंटर के कर्मियों का 4 प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया।



सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई प्रणाली

6

कृ.वि.के., बेगूसराय के दोनों प्रक्षेत्र सौर ऊर्जा आधारित अन्तःसतही सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली से आच्छादित है। इसकी स्थापना वर्ष 2020-21 में प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना से की गई है। इस प्रणाली से प्रक्षेत्र के किसी भी हिस्से में हमेशा सिंचाई जल की उपलब्धता बनी रहती है। इसमें लगे हुए हाईड्रेन्ट से ड्रिप या स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली को जोड़ा जा सकता है तथा आवश्यकतानुसार परम्परागत डिलेवरी पाइप से भी जोड़ा जा सकता है। इसकी सफलता को देखकर प्रदान संस्था ने सोलर सिंचाई प्रणाली का विस्तार जिले के 26 अन्य गांवों में भी किया है।





केचुआ के द्वारा जैविक पदार्थों को खाने के बाद उनके पाचन तंत्र से गुजरने से जो अवशिष्ट पदार्थ निकलता है उसे वर्मीकम्पोस्ट या केचुआ खाद कहते हैं। केन्द्र के द्वारा स्वच्छता एक्शन प्लान के अंतर्गत इस वर्ष केचुआ जैविक खाद पर अब तक 4 प्रशिक्षण दिए जा चुके हैं। किसान भाइयों एवं उद्यमियों के लिए केन्द्र पर दो

प्रजातियों के केचुआ उपलब्ध है। जिले के 20 किसानों को भारतीय पशु अनुसंधान संस्थान, बरेली से प्राप्त केचुआ जय गोपाला का वितरण एवं संवर्धन किया जा रहा है पूर्व में भी केन्द्र के तकनीकी सहयोग द्वारा श्री सुरेश प्रसाद सिंह ने एस.पी. वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन विकास केन्द्र, गारा ब्रांड नाम के साथ स्थानीय किसानों के बीच अपने उत्पाद का व्यवसायीकरण किया है। राज्य में सर्वप्रथम केचुआ जैविक खाद का प्रचार एवं प्रसार करने का गौरव बेगूसराय कृ0वि0के0 को प्राप्त है।

जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम

कृ.वि.के., बेगूसराय में यह कार्यक्रम 14 दिसम्बर, 2020 में प्रारंभ हुआ। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य फसल चक्र में सुधार, फसल विविधीकरण तथा जलवायु परिवर्तन का फसलों पर प्रभाव का अध्ययन तथा जलवायु के अनुकूल कृषि में सुधार करना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अब तक कुल 10 फसल चक्र पूर्ण हो चुके हैं तथा एक फसल चक्र वर्तमान में चल रहा है। बेगूसराय जिले के 5 गाँवों गोपालपुर, रामपुर, सकरौली, विक्रमपुर और बड़कुरबा में अभी यह कार्यक्रम चल रहा है। जीरो टिलेज विधि द्वारा



मक्का, गेहूँ, मसूर, मूँग की बुआई इस कार्यक्रम का मुख्य घटक है साथ ही श्री अन्न के अंतर्गत रागी, कौनी तथा सावां की खेती भी की जा रही है। आलू आधारित फसल प्रणाली इस कार्यक्रम का सबसे सफल (आर्थिक एवं रोजगार सृजन क्षमता) प्रणाली रही है। इसके अंतर्गत प्रति वर्ष 1668 एकड़ (595 एकड़ खरीफ, 623 एकड़ रबी, 250 एकड़ गरमा तथा 200 एकड़ में लेजर लैंड लेवलर) में प्रत्यक्षण किया जा रहा है।

केन्द्र द्वारा बीज उत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत वर्ष 2023-24 में विभिन्न फसलों (धान, गेहूँ, जौ, रागी, सांवां, सरसों, आलू, तिल, अरहर, मूंग, मसूर, हल्दी) का कुल 397.1 क्विंटल उन्नत बीज का उत्पादन किया गया। जिसका विवरण निम्नलिखित है



फसल	प्रभेद	उत्पादन (कु0)	फसल	प्रभेद	उत्पादन (कु0)
धान	राजेन्द्र श्वेता	64.4	अरहर	आर. अरहर-1	4.36
गेहूँ	डी.बी.डब्ल्यू-252	35.70		आर. अरहर-2	5.30
	एच.डी.-2967	74.25	हल्दी	आर. सोनिया	11.80
रागी	आर.ए.यू.-3	5.19	मूंग	आई.पी.एम.-2-3	4.52
सांवां	आर.ए.यू.-5	2.97		विराट	4.20
सरसों	आर. सुफलाम	24.30	मसूर	आई.पी.एम. 2-3	4.0

केन्द्र द्वारा किसानों, ग्रामीण युवक/युवतियों एवं कृषि प्रसार कर्मियों के क्षमता विकास हेतु विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। वर्ष 2023-24 में प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से किसानों एवं महिला किसानों को कुल 144, ग्रामीण युवक/युवतियों को कुल 24, प्रसार कर्मियों को 18, प्रायोजित कार्यक्रम 5, तथा 3 व्यावसायिक प्रशिक्षण



प्रदान किया गया। इन सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से कुल 2748 किसानों/महिला किसानों, ग्रामीण युवक/युवतियों तथा प्रसार कर्मों लाभान्वित हुए।



कृ.वि.के., बेगूसराय के पास मृदा जाँच प्रयोगशाला सन 2010 से संचालित है। मृदा जाँच के द्वारा किसान अपने मृदा पोषक तत्वों की संस्तुति एवं उर्वरक प्रयोग की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही मृदा स्वास्थ्य कार्ड भी प्राप्त कर सकते हैं। मृदा स्वास्थ्य परीक्षण एवं किसानों द्वारा अनुपालन के कारण उनके मृदा स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा अच्छी हुई है और लोग अपेक्षाकृत कम तथा संतुलित खादों का प्रयोग करने लगे हैं। मृदा जाँच हेतु प्रति नमूना 50 रुपया किसान को भुगतान करना पड़ता है तथा मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्राप्त करने के लिए प्रति कार्ड

10 रु0 अलग से भुगतान करना पड़ता है। वर्ष 2023-24 में इस प्रयोगशाला में 810 किसानों के मृदा जांच किया गया तथा केन्द्र को रु0 40500 का राजस्व प्राप्त हुआ।



केन्द्र द्वारा विभिन्न फसलों प्रभेदों, पशु आहार/उपकरणों का किसानों के खेत में प्रदर्शन जांचने के लिए वर्ष 2023-24 में कुल 10 अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण किया गया। परिणाम निम्नलिखित है:

फसल / प्रकार	प्रभेद	प्रत्यक्षण उत्पादकता (कु0/हे0)	सामान्य उत्पादकता (कु0/हे0)	उत्पादकता में वृद्धि (%)
जौ	DWRB-137	41.54	35.13	18.23
मटर	आजाद मटर-1	48.60	40.00	26.37
मिर्च	पूसा दिप्ती	76.60	66.00	21.00
पपीता	अर्का प्रभात	255.20	250.00	7.70
हल्दी	राजेन्द्र सोनिया	212.00	171.20	23.80
आलू	कुफरी चिप्सोना	280.40	250.50	29.90
काऊ मैट	दूध उत्पादन किग्रा/दिन	10.52	8.22	21.90
बकरी आहार प्रणाली	औसत दैनिक (ग्राम) शारीरिक वजन	54.00	36.00	33.33
धान	धान की सीधी बुआई में 3 नोजल स्प्रेयर	48.21	44.54	8.24

केन्द्र द्वारा वर्ष 2023-24 में कुल 6 तकनीकियों का विभिन्न किसानों के प्रक्षेत्र पर तथा केन्द्र में परीक्षण किया गया जिनका परिणाम निम्नलिखित है।



क्रम सं.	ऑन फार्म ट्रायल का शीर्षक	परिणाम
1.	खेत की विभिन्न दशाओं में मूँग की बुआई हेतु मल्टी क्रॉप प्लांटर का मुल्यांकन	मल्टी क्रॉप प्लांटर से शून्य जुताई में मूँग की बुआई करने पर उत्पादकता में 24.27% की वृद्धि हुई।
2.	गेहूँ की सिंचाई में कट-ऑफ अनुपात का आकलन	गेहूँ की उत्पादकता 90% कट-ऑफ सिंचाई में सबसे अधिक था।
3.	बकरियों के प्रदर्शन पर प्रसव पूर्व अवधि के दौरान कृमिनाशक और चिलेटेड खनिज मिश्रण अनुपूरकता का आकलन	बकरियों का औसत शारीरिक भार कृमिनाशक एवं चिलेटेड खनिज मिश्रण अनुपूरकता समूह में सामान्य से 19.17% अधिक प्राप्त हुआ।
4.	हाईड्रोपोनिक्स गेहूँ एवं मक्का चारे के उत्पादन और तुलनात्मक पोषण मूल्य मूल्यांकन पर अध्ययन	चारा उत्पादन/किलो बीज के लिए हाईड्रोपोनिक्स मक्का का उत्पादन हाईड्रोपोनिक्स गेहूँ से 15.71% और पारंपरिक चारा उत्पादन से 47.14% अधिक प्राप्त हुआ।
5.	पपीते की खेती के लिए जैविक आदानों का आकलन	5 मिली आई.आई.एच.आर. कंसोर्टिया को 2 किलो वर्मीकम्पोस्ट में मिलाकर प्रति पेड़ रोपाई के समय व्यवहार करनेपर सबसे अच्छा परिणाम प्राप्त हुआ।



बेमौसमी सब्जियों की खेती किसानों के लिए काफी लाभदायक होता है लेकिन खुले में बिचड़ा उगाना काफी कठिन होता है इन्हीं कारणों को ध्यान में रखते हुए केन्द्र पर नेशनल हार्टिकल्चर मिशन की सहायता से पाली हाउस और शेड नेट हाउस की स्थापना की गयी है जिससे किसानों को ससमय गुणवत्तापूर्ण पौधे उपलब्ध हो सकें। उन्नत प्रभेद के पपीता, टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, वैगन, कद्दू, खीरा, लौकी, नेनुआ आदि के बिचड़ा मौसम के अनुसार उपलब्ध रहते हैं बिचड़ा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए मिट्टी रहित प्रोटेक्टेड नर्सरी तकनीक का सहारा लिया जाता है। वर्ष 2023-24 में 12177 सब्जी एवं फलों के पौधों का उत्पादन किया गया।



धान-गेहूँ फसल प्रणाली में टिकारूपन लाना तथा वार्षिक उत्पादन 10 टन/हे0 इस परियोजना का मुख्य लक्ष्य है। यह परियोजना वर्ष 2009 से केन्द्र पर संचालित है। धान की सीधी बुआई, जीरो टिलेज से गेहूँ की खेती, धान नर्सरी व्यवसाय, मशीनों का सर्विस प्रोवाइडर इत्यादि इस परियोजना के मुख्य घटक हैं। इस परियोजना का नेतृत्व CIMMYT द्वारा अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान और अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान के साथ मिलकर किया जा रहा है और इसे अमेरिकी अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसी और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन द्वारा वित्त पोषित किया जा रहा है।

मिर्च की खेती जिले में प्रमुखता से होती थी लेकिन उकठा, जड़ गलन एवं मजदूरों की कमी से किसानों इसकी खेती छोड़ने लगे थे। केन्द्र ने मिर्च के जड़ गलन रोधी प्रभेद के चयन के लिए मिर्च के प्रभेद पूसा ज्वाला, काशी अनमोल, पूसा सदाबहार, काशी गौरव, काशी आभा का प्रयोगात्मक अध्ययन 2022-2023 में किया गया तथा इन प्रभेदों को किसानों के बीच प्रचारित किया जा रहा है। साथ ही बीज उपचार हेतु कार्बेन्डाजीम (2 प्रतिशत) का प्रयोग पर जोर दिया जा रहा है। जिले के किसान श्री राम कुमार सिंह, ग्रामपोस्ट बिक्रमपुर ने कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़कर अपने खेत में काशी आभा मिर्च के प्रभेद का प्रयोग किया है। इसकी खेती पुनः धीरे-धीरे बढ़ रही है।



केन्द्र इस काम को आगे बढ़ाते हुए “बीज आसान : आत्मनिर्भर किसान” थीम के साथ काम कर रहा है इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए प्रथम कड़ी में संपूर्ण राष्ट्रीय कृषि शोध प्रणाली या किसी निजी संस्था द्वारा बेगूसराय के लिए संस्तुत सभी बीजों का परीक्षण अपने प्रक्षेत्र पर करता है। इस काम में वित्तीय सहयोग आत्मा, बेगूसराय द्वारा लिया जाता है। फसल पकने पर जिले के सभी 18 प्रखण्डों से लगभग 50 किसानों को बुलाकर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया जाता है इस आयोजन में जिले के नवनवेशी किसानों को बुलाया जाता है। किसान जिस भी प्रभेद को सबसे ज्यादा पसन्द करते हैं उस प्रभेद के बीज को कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रक्षेत्र पर उगाया जाता है आयोजन में भाग लेने वाले किसानों को बीज बिक्री भी किया जाता है और स्थानीय स्तर पर प्रचार प्रसार कर पंचायत स्तर पर अन्य प्रगतिशिल किसानों तक पहुँचाने की सिफारिश की जाती है। इससे बीज पंचायत स्तर तक पहुँच जाता है।



जीरो टिलेज आलू की खेती

18

आलू अनुसंधान केन्द्र, पटना के मार्गदर्शन में बिना जुताई आलू की खेती का प्रत्यक्षण वर्ष 2022–23 से कृ.वि.के, बेगूसराय के प्रक्षेत्र में किया गया। इस विधि द्वारा 40 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में 92 किलो आलू का उत्पादन प्राप्त हुआ। इस विधि में आलू के कन्द को नम जमीन पर रखकर खरपतवार की एक ईंच मोटी परत से ढक देते हैं। इससे पौधों को नमी तथा तापमान का तनाव नहीं सहना पड़ता है तथा खेत में खरपतवार भी नहीं उगते हैं। जुताई, निराई—गुड़ाई तथा खुदाई का खर्च भी बचता है। परंपरागत विधि की तुलना में इस विधि में 55.75 प्रतिशत की आय में वृद्धि दर्ज की गयी।



पपीते की खेती

19

पपीता बेगूसराय जिले की पहचान है। बिहार में पाये जाने वाली सभी प्रभेद बेगूसराय में पायी जाती है। पपीते की खेती में शुद्ध लाभ 6–7 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त हो जाती है। केन्द्र के तकनीकी सहयोग एवं जलवायु की अनुकूलता के कारण इसकी खेती जिले में हजारों एकड़ में होने लगी है। केन्द्र द्वारा समय—समय पर विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से किसानों को पपीते की खेती के लिए मदद किया जाता है। परिणामस्वरूप बेगूसराय जिला पूरे बिहार में प्रमुख पपीता उत्पादक जिले के रूप में प्रसिद्ध है।





बेगूसराय जिले के किसानों के द्वारा इसकी शुरुआत वर्ष 2012 में की गई। सोयाबीन की खेती जिले में लगभग 50000 हेक्टेयर में होती थी और इसकी औसत उपज 28 क्विंटल/हे० थी। पिछले कुछ वर्षों से विपरीत मौसम एवं अच्छे बीज की उपलब्धता में कमी के कारण किसान इसकी खेती से विमुख हो रहे हैं इसको पुनः जीवित करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र ने 30.10.2021 को भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर के साथ मिलकर प्रक्षेत्र दिवस सह कृषक-वैज्ञानिक-उद्यमी मिलन समारोह का आयोजन किया। भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र बेगूसराय के सहयोग से सोयाबीन के 119 चयनित जीनोटाइप पर अध्ययन किया गया। वर्तमान में सोयाबीन का प्रभेद NRC-128 की उपज का विश्लेषण करने पर पाया गया है कि यह स्थानीय या अन्य प्रभेद की तुलना में इसकी उपज 3.50 क्विंटल/हे० अधिक है।

पशु बांझपन निवारण कैंप सह सेमिनार

कृषि विज्ञान केन्द्र, बेगूसराय द्वारा बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के सहयोग से भारत सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम पशुधन जागृति अभियान के तहत केन्द्र के प्रांगण में दिनांक 29.12.2023 को पशु बांझपन निवारण शिविर सह सेमिनार का आयोजन किया गया। डा. पंकज कुमार, उपनिदेशक प्रसार शिक्षा ने बताया कि इस कार्यक्रम का आयोजन बिहार राज्य के 13 आकांक्षी जिलों में किया जा रहा है जिसमें बेगूसराय जिला भी चयनित है। इस अवसर पर बांझपन के अलावा, परजीवी जनित रोग से ग्रस्त, दस्त, थनैला, अफरा इत्यादि समस्या से ग्रसित 40 पशुओं का निःशुल्क उपचार किया गया तथा दवाइयाँ भी वितरित की गई। इस कार्यक्रम में 150 से अधिक किसानों ने भाग लिया।



किसान मेला

अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत मार्च 22 एवं 23 को केन्द्र के प्रांगण में दो दिवसीय किसान मेला का आयोजन किया गया। इस किसान मेला में "समेकित खेती-समृद्ध किसान" के मुद्दे पर बल दिया गया। किसान मेला में पोषण वाटिका, सब्जी बिचड़ा उत्पादन इकाई, पालीहाउस, दलहन प्रत्यक्षण इकाई, निराश्रित पशु प्रबंधन माडल, कस्टम हायरिंग सेंटर, जैविक खाद, नैडेप कम्पोस्ट इकाई, प्राकृतिक खेती, जलवायु अनुकूल खेती, बकरी-मुर्गी पालन, अजोला उत्पादन इकाई आदि के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी गयी। इसके अलावा फल और फूलों के 15 स्टॉल भी लगाये गये, जिसके बारे में मेला में आये सैकड़ों किसानों ने भ्रमण कर आवश्यक जानकारी प्राप्त किया।



केन्द्र पर अवस्थित प्रत्यक्षण इकाइयाँ

प्रत्यक्षण इकाई	सह इकाइयाँ	प्रत्यक्षण इकाई	सह इकाइयाँ
1. समेकित कृषि प्रणाली	क) निराश्रित पशु प्रबंधन इकाई ख) बकरी पालन इकाई ग) कुक्कुट पालन इकाई घ) हेचरी सह ब्रूडर इकाई ङ) चारा उत्पादन इकाई च) अजोला उत्पादन इकाई छ) फलदार वृक्ष (अमरूद+सहजन)	6. पौधशाला	क) सब्जी बिचड़ा उत्पादन इकाई ख) पॉली हाउस ग) ग्रीन नेट शेड हाउस घ) लीची तथा आम का मातृ वृक्ष
2. प्राकृतिक खेती	क) प्राकृतिक खेती उपादान उत्पादन इकाई ख) फसल उत्पादन प्रत्यक्षण इकाई	7. जैविक उपादान	क) वर्मी कम्पोस्ट इकाई ख) वर्मी वाश इकाई ग) नैडेप कम्पोस्ट इकाई
3. पोषण वाटिका	क) मौसमी सब्जी ख) फल वृक्ष ग) कन्द वर्गीय सब्जी	8. फसल संग्रहालय	क) मौसम आधारित सभी प्रमुख फसल प्रत्यक्षण
4. कस्टम हायरिंग केन्द्र	क) मानवचालित, स्वचालित तथा ट्रैक्टर चलित संपूर्ण यंत्र	9. जलवायु अनुकूल खेती	क) दस प्रमुख फसल प्रणाली
5. सिंचाई प्रणाली	क) अन्तःसतही पाइप लाईन ख) सोलर एवं विद्युत आधारित पंप ग) सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली	10. बीज उत्पादन	क) मौसम के अनुसार बीज उत्पादन ख) बीज प्रसंस्करण इकाई

उपलब्धियों
पर एक नजर



कृषि विज्ञान केन्द्र, बेगूसराय, बिहार

डॉ. रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा, समस्तीपुर, बिहार

E-mail: head.kvk.begusarai@rpcau.ac.in

Website: www.begusarai.kvk4.in

Twitter/X:- @KVKBEGUSARAI



Diksha Art & Prints
+91-9431436534
ISO: 19001:2015